लिए ही श्रीकृष्ण ने विपुल वैदिक साहित्य प्रदान किया है। सर्वप्रथम उन्होंने वेद को चार भागों में विभक्त किया, फिर पुराणों में उनका विशदीकरण किया तथा अल्प सामर्थ्य वालों के लिये 'महाभारत' की रचना की। महाभारत रूपी महासागर से ही भगवद्गीता रूपी महारत्न निकला है। तत्पश्चात्, सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के सार तत्त्व का 'ब्रह्मसूत्र' में निरूपण किया गया और भविष्य में जनता के मार्गदर्शन के लिए उन्होंने स्वयं 'ब्रह्मसूत्र' के अपौरुषेय भाष्य — श्रीमद्भागवत की रचना की। हमें इन वैदिक शास्त्रों के चिन्तन-मनन में चित्त को नित्य लगाए रखना है। जिस प्रकार विषयी मनुष्यों का चित्त लौकिक पत्र-पत्रिकाओं में ही लगा रहता है, उसी भाँति हमें अपने चित्त को व्यासदेव द्वारा विरचित इन ग्रन्थों के अध्ययन में तत्पर रखना है। इससे हम मृत्यु समय में श्रीभगवान् का स्मरण-चिन्तन कर सकेंगे। श्रीभगवान् ने एकमात्र इसी मार्ग का परामर्श किया है; परिणाम के विषय में उनकी प्रतिभू (गारन्टी) है: 'इसमें सन्देह नहीं।' (गीता ८.७)

तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयः ।।

'इसलिए हे अर्जुन! तू नित्य-निरन्तर मेरे कृष्ण रूप का स्मरण कर और युद्ध-रूपी स्वधर्म का आचरण भी कर। इस प्रकार मेरे परायण कर्म करता हुआ तथा मेरे अर्पण किये हुए मन-बुद्धि से युक्त हुआ तू मुझको ही प्राप्त होगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।'

श्रीकृष्ण अर्जुन से स्वधर्म को त्याग कर अपना स्मरण करने को नहीं कहते। वे किसी अव्यवहारिक पद्धति का परामर्श कभी नहीं देते। इस संसार में देह धारण करने के लिए कर्म करना अनिवार्य है। कर्म के अनुसार मानव समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—इन चार वर्णों में विभाजित है। ब्राह्मण अथवा बुद्धिजीवियों का वर्ग एक प्रकार का कार्य करता है, क्षत्रिय (प्रशासिनिक) वर्ग दूसरा कर्म करता तथा वैश्य और शूद्र भी अपने-अपने स्वधर्म का पालन करते हैं। मानव समाज का यह नियम है कि चाहे कोई शूद्र हो अथवा वैश्य, क्षत्रिय, कृषक, उत्तम वर्ण का बुद्धिजीवी हो अथवा वैज्ञानिक या अध्यात्मवादी, जीवन धारण करने के लिए उसे कर्म करना ही होगा। इसी कारण श्रीभगवान् अर्जुन से कहते हैं कि उसे अपने कार्य को त्यागने की आवश्यकता नहीं, वरन् स्वधर्म का आचरण करता हुआ भी वह उन्हीं (कृष्ण) का स्मरण करता रहे। यदि वह जीवन के लिए संघर्ष करते हुए श्रीकृष्ण के नित्य स्मरण का अभ्यास नहीं करेगा, तो मृत्यु-काल में श्रीकृष्ण का स्मरण नहीं कर सकेगा। श्रीचैतन्य महाप्रभु का भी यही उपदेश है। उन्होंने कहा है कि नित्य-निरन्तर श्रीभगवान् का कीर्तन करते हुए उनके स्मरण का अभ्यास करना चाहिए। श्रीभगवान् और उनके नाम में भेद नहीं है। अतएव अर्जुन को भगवान् श्रीकृष्ण का यह उपदेश कि, 'मेरा स्मरण कर' तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु का यह उपदेश कि श्रीकृष्णनाम का कीर्तन करो'—वस्तुतः एक ही हैं। इनमें भेद नहीं है, क्योंकि श्रीकृष्ण और श्रीकृष्णनाम सर्वथा अभिन्न हैं।